विदेशी प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने एसएचजी महिलाओं से सुनी उनकी जुबानी

आर्थिक आजादी की ओर महिलाओं के बढ़ते कदम

दिनेश कुमार

आजीविका की ग्रामीण महिलाओं में बढ़ते आत्मविश्वास को समझने के लिए विदेशी प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने रांची जिले के अनगड़ा प्रखंड के गेतलसूद गांव पहुंचे. यहां सदस्यों ने करीब साठ एसएचजी महिलाओं से रू-ब-रू हुए. स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने अगंतुकों का जोरदार स्वागत करते हुए अपने कामों को बेबाक से बताते हुए पहले की स्थिति और आजीविका से जुड़ने के बाद की स्थिति को विस्तार से बताती नजर आयी एसएचजी महिलाएं.

कहां-कहां गया प्रतिनिधिमंडल

जिला	प्रखंड	पंचायत/गांव
रांची	अनगड़ा	गेतलसूद
पश्चिम सिंहभूम	मनोहरपुर	सतपोटका
गुमला	रायडीह	सीलम

झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी (जेएसएलपीएस) राज्य के 24 जिलों में आजीविका कार्यक्रम चला रहा है. इन कार्यक्रमों के सहयोग से ग्रामीण महिलाएं आर्थिक तौर पर मजबूत हुई हैं. एसएचजी महिलाओं के कार्यों के क्रियान्वयन के तरीकों को समझने के लिए 18 सदस्यीय विदेशी प्रतिनिधिमंडल रांची जिले के अनगड़ा प्रखंड के गेतलसूद गांव के अलावा पश्चिमी सिंहभूम जिले के मनोहरपुर प्रखंड के सतपोटका गांव और गुमला जिले के सीलम गांव का दौर किया. इस दौरान एसएचजी महिलाओं की कार्यप्रगति को सामने से देखते हुए समझने की कोशिश करते नजर आयें. प्रतिनिधिमंडल में जाम्बिया, बुर्किना फासो, मेक्सिको, ग्वाटेमाला के कुछ सदस्य शामिल थे. ट्रिकलअप की उपाध्यक्ष जया सरकार भी टीम में थी. सदस्यों ने महिला एसएचजी, ग्राम संगठन और कलस्टर समूह की महिलाओं के बीच जाकर उनसे उनके कार्य करने के तरीके, संचालन और काम में आने वाली चुनौतियों को जानना चाहा. ग्रामीण महिलाओं ने एसएचजी निर्माण से लेकर ऋण लेने तक के प्रावधान को सदस्यों के सामने रखा. इन्होंने बताया कि कैसे खुद के बचत से ऋण लेकर मछली पालन कर रही हैं. आम की बागवानी कर रही हैं. पशुओं की देखभाल कर आत्मनिर्भर बन रही हैं. महिलाओं ने उन सामाजिक चुनौतियों का भी जिक्र किया जिसका इन्हें सामना करना पड़ा. विदेशी प्रतिनिधिमंडल के तीन दिवसीय दौरे के दौरान ग्रामीण महिलाओं में गजब का उत्साह दिखा.

रांची के गेतलसूद पंचायत सचिवालय में एसएचजी की सदस्यों के साथ बैठक करते विदेशी प्रतिनिधिमंडल.

बचत कर जुनिका बेटे को पढ़ा रही है इंजीनियरिंग

पश्चिमी सिंहभूम जिले के मनोहरपुर प्रखंड स्थित तिरला गांव की निवासी जुनिका टिक्का आत्मविश्वास से लबरेज नजर आ रही है. जुनिका कहती हैं, किस तरह वह गरीबी से बेहतरी की ओर बढ़ी और इस काम में आजीविका ने किस तरह से भरपूर सहयोग किया. विकास महिला स्वयं सहायता समूह की सदस्य जुनिका आज भी दूसरे प्रखंडों में जाकर ग्रामीण महिलाओं को एसएचजी गठित करने के लिए प्रेरित करती हैं. साथ ही इन महिलाओं को एसएचजी चलाने के लिए प्रशिक्षण भी देती है. एसएचजी की सदस्य बनकर खुद का बचत तो करती ही है, प्रशिक्षण देकर अतिरिक्त आय प्राप्त कर आत्मनिर्भर भी बन रही है. जुनिका कहती हैं कि पहले परिवार की स्थिति अच्छी नहीं थी. अगर घर में कोई बीमार पड़ जाये तो महाजन से कर्ज लेकर इलाज कराना पड़ता था, लेकिन अब महाजनों के आगे हाथ नहीं फैलाती और इसके लिए सारा श्रेय जेएसएलपीएस के अधिकारियों को जाता है. जुनिका कहती है कि आज हमारा समूह प्रति महीने 1820 रुपये की बचत कर रहा है यानि सालाना हम 21840 रुपये की बचत कर पा रहे हैं. समूह की जिस महिला को जब पैसे की आवश्यकता होती है, समूह से लेकर अपनी आजीविका चला रही है. जुनिका गरीबी के कारण सिर्फ 10वीं तक ही पढ़ सकी लेकिन अपने बड़े बेटे को सिविल इंजीनियरिंग की पढ़ाई करवा रही है. बेटे की पढ़ाई के लिए समूह से ऋण ली है और कुछ पैसे इनके पति दे रहे हैं. इसके अलावा श्रीविधि से खेती करते हुए दूसरों को भी इसे अपनाने को कहती है.

सामाजिक बाधाओं को तोड़कर आगे आती ग्रामीण महिलाएं : जार्ज कॉल

मध्य अमेरिका के देश ग्वाटेमाला से आये जॉर्ज कॉल ग्रामीण महिलाओं के हौसले को देखकर दंग थे. स्पैनिश भाषा जानने वाले जार्ज कहते हैं, सामाजिक बाधाओं को पार कर आगे बढ़ना बहुत कठिन काम है. महिला सशक्तिकरण एक अच्छा उदाहरण है. जार्ज आगे कहते हैं कि ग्वाटेमाला और भारत में गरीबी एक जैसी है. मैं भी आदिवासियों के बीच काम करता हूं. मुश्किलों में इन महिलाओं का मुस्कुराना इन्हें काफी अच्छा लगा. कहते हैं, मुझे यहां यह जानने का अवसर मिला कि महिलाएं कैसे एसएचजी से जुड़कर अपने जीवन को आगे बढ़ा रही हैं. भारत सांस्कृतिक रूप से धनी देश है. इसका इतिहास महान है. अमीरी और गरीबी के बीच अधिक का अंतर है. हालांकि यहां की ग्रामीण महिलाओं से मिलकर बहुत कुछ सीखने को मिला.

प्रभावित करती है एसएचजी महिलाओं के कार्य : जया सरकार

ट्रिकलअप (यूएसए) की उपाध्यक्ष जया सरकार इन ग्रामीण महिलाओं के कार्यों को प्रभावित करने वाला बताती है. महिलाएं सामाजिक प्रतिबंध को तोड़कर समाज के मुख्यधारा में आ रही हैं, यह बहुत बड़ी बात है. सामाजिक संस्थाओं को इनके सहयोग में आगे आना चाहिए. इनका हौसला देखने लायक है. आत्मविश्वास से भरपूर इन महिलाओं में कुछ कर गुजरने की जबर्दस्त जज्बा है. गांव के विकास में इन महिलाओं की सहभागिता देखते ही बनती है.

श्रीविधि से खेती कर बनी आत्मनिर्भर : रंजीता देवी

मनोहरपुर प्रखंड के सतपोटका गांव की रंजीता देवी का परिवार खेती पर निर्भर है. कहती हैं, पहले पारंपरिक तरीके से खेती होती थी, जिसके कारण फसल की पैदावार कम होती थी. लेकिन जब से जैविक खाद का उपयोग अपने खेतों में करने लगी, तब से खेतों में पैदावार अच्छी होने लगी. कहती हैं कि जैविक खाद का ही नतीजा है कि तीन एकड़ के खेत में करीब दस क्विंटल अनाज की पैदावार हुई है. साथ ही फूलगोभी, टमाटर व बैंगन का भी खेती कर रही है. अनाज और सब्जी बेचकर 20 हजार रुपये की आमदनी हो रही है. रंजीता कहती हैं कि आर्थिक स्थिति ठीक होने के कारण ही अपने बच्चों की अच्छी पढ़ाई पर अब ध्यान देने लगी है. एसएचजी से जुड़कर मेरे अंदर आत्मविश्वास बढ़ा है. जहां पहले किसी से बात करने में काफी संकुचाती थी लेकिन अब हर किसी से बेहिचक बात करने में कोई परेशानी नहीं होती है. गांव में आये विदेशी प्रतिनिधिमंडल को जब रंजीता की बातों को अंग्रेजी में अनुवाद कर बताया जा रहा था तो रंजीता काफी आश्चर्य महसूस कर रही थी.

अपनों से संघर्ष कर आत्मनिर्भर बनी : संगीता देवी

गेतलसूद गांव की संगीता देवी कहती हैं कि आंध्र प्रदेश से आयी प्रशिक्षक से प्रेरित होकर स्वयं सहायता समूह से जुड़ी. कहती हैं कि शुरू में पति बाहर जाने से रोकते थे, लेकिन चुपके से एसएचजी की बैठकों में भाग लेने चली जाती थी. बचत की जानकारी मिलने पर 10-10 रुपये समूह में जमा करने लगी. संगीता ने समूह से ऋण लेकर मछली पालन शुरू की. मछली पालन से आमदनी बढ़ने के साथ धीरे-धीरे आर्थिक स्थिति सुधरने लगी. अब मछली पालन आजीविका का मुख्य साधन बन गया. पति व अन्य लोगों का सहयोग मिलने से आत्मविश्वास बढ़ने लगा. बाद में संगीता देवी दूसरे गांवों में जाकर अन्य महिलाओं को एसएचजी बनाने के लिए प्रेरित करने लगी. एसएचजी से जुड़ने और उसके कामों को बढ़-चढ़ करने से आमदनी भी होती है. हर महीना उसे 1500 रुपये की आय हो जाती है. अब संगीता आर्थिक तौर पर आत्मनिर्भर बनने की ओर अग्रसर है. संगीता कहती हैं कि अब मेरे परिवार को मुझ पर काफी भरोसा है, यह मेरे लिए गर्व की बात है.

दस हजार चूजों का शेड तैयार करना लक्ष्य : सुमति

सीलम पंचायत के सीलग गांव निवासी सुमति देवी गुमला ग्रामीण पॉल्ट्री स्वावलंबी सहकारी समिति, सीलम की पूर्व अध्यक्ष हैं. दसवीं कक्षा तक पढ़ी सुमति देवी ने शादी के बाद समूह से जुड़ी. प्रदान का सहयोग पाकर वर्ष 2004 में 500 चूजों का पॉल्ट्री शुरू किया. इसके लिए बैंक से दस हजार का ऋण और स्वर्ण जयंती ग्रामीण स्वरोजगार योजना के तहत दस हजार रुपये का अनुदान लिया. वर्ष 2016 में 17 हजार रुपये का ऋण लेकर 500 शेड का निर्माण किया. इस व्यवसाय से सुमति देवी हर महीने चार हजार रुपये कमा लेती हैं. समय निकालकर खेती भी करती है सुमति देवी, जिससे उसे अतिरिक्त आय भी हो जाती है. सीलम में दाना उत्पादन केंद्र होने से पॉल्ट्री का व्यवसाय करना आसान है. यहां पॉल्ट्री के लिए दाना बनाया जाता है. महिला पॉल्ट्री व्यवसायी को कम दामों पर दाना उपलब्ध कराया जाता है.

गरीबों को मुख्यधारा में जोड़ना प्रमुख लक्ष्य

पारितोष उपाध्याय
सीइओ
जेएसएलपीएस

विदेशी प्रतिनिधिमंडल के सदस्य झारखंड में चल रहे आजीविका के कार्यों को देखकर अपने देश में लागू कर पायेंगे. अति गरीब लोगों को कैसे मुख्यधारा में लाया जाए, इसके लिए हम काम कर रहे हैं. सरकारी सुविधाओं को उन तक कैसे पहुंचाया जाए , इस पर काम कर रहे हैं. आजीविका को लेकर हो रहे यहां के अच्छे काम को दूसरे देश के लोग लाभ उठाते हैं और हमारे लोग विदेशों में हो रहे अच्छे काम को वहां जाकर सीखते हैं, यह अच्छा संकेत है.

बागवानी व पॉल्ट्री व्यवसाय ने बनाया आत्मनिर्भर : मणि देवी

जंगलों से हराभरा गुमला जिला. इस जिले के रायडीह प्रखंड स्थित सीलम टोंगरी गांव की मणि देवी. मणि देवी घर चलाने के लिए लकड़ी, दातून व पत्ते बेचकर किसी तरह से अपनी गुजर बसर कर रही थी. वर्ष 2001 में सामाजिक संगठन प्रदान ने सीलम गांव के लिए गांव विकास योजना (वीडीपी) की शुरुआत की. इसके तहत ग्रामीणों को आम बागान, मुर्गी फार्म तथा डोभा बनाने का प्रशिक्षण दिया. इसी का लाभ लेकर मणि देवी ने वर्ष 2005 में 300 चूजों का पॉल्ट्री फार्म खोला. कुछ दिनों के बाद मणि ने चूजों की संख्या 500 कर ली. जब यह डेढ़ किलो का हुआ तो मणि ने उसे दस हजार रुपये में बेच दिया. मणि देवी प्रदान के सहयोग से अपने जमीन पर 50 आम का पेड़ लगा रखी है. इस साल छह हजार रुपये का आम बेच चुकी है. अभी 800 चूजों का पॉल्ट्री फार्म मणि देवी चला रही हैं.

पश्चिमी सिंहभूम के सतपोटका गांव में एसएचजी के सदस्यों के साथ प्रतिनिधिमंडल.

पशु सखी कहने पर होता है गर्व : सोलीती महतो

मनोहरपुर प्रखंड के महुलडीहा गांव की निवासी सोलीती महतो इंटर तक पढ़ी है लेकिन अब उसे लोग पशु सखी कहते हैं. अपने गांव समेत दूसरे गांवों में पशुओं की बखूबी देखभाल कर रही है सोलीती महतो. बकरी, मूर्गी, सूकर की अच्छी देखभाल कर रही है. सोलीती कहती हैं, इसके लिए आजीविका के माध्यम से प्रशिक्षण मिला. प्रशिक्षण के बाद गांवों में पशुओं को बेहतर देखभाल कर रही है और इसके लिए परिवार समेत अन्य ग्रामीणों का भरपूर सहयोग मिलता है. कहती हैं कि प्रत्येक पशुओं के इलाज पर ढाई से दस रुपये तक मिल जाता है. पशु सखी बनकर हर महीने 1500 रुपये तक कमा लेती है. इसने अपने घर पर भी करीब 50 मूर्गियां पाल रखी है और इसे बेचकर आमदनी भी कर रही है. इतना ही नहीं जैविक खाद बनाने का प्रशिक्षण भी लिया. प्रशिक्षण लेकर खुद जैविक खाद बनाने लगी और इसके प्रयोग से खेतों में पैदावार भी अच्छी होने लगी. सोलीती हर साल लगभग 20 हजार रुपये का अनाज बेच रही है.